जई
(OAT)

जई रबी की एक प्रमुख चारा फसल है। इसमें प्रोटीन की मात्रा कम होती है। इसलिए इसे बरसीम या रिजका के साथ मिलाकर खिलाना अच्छा होता है। जई हरे चारे के अलावा 'हे' अथवा 'साइलेज' के रूप में भी संरक्षित करके, जिस समय चारा उपलब्ध नहीं होता है, प्रयोग किया जाता है। इससे पशुओं, मुर्गी व भेड़ के लिए अच्छा दाना भी तैयार किया जाता है। जई में शुष्क पदार्थ की मात्रा 30–35 प्रतिशत होती है।

प्रजातियाँ

केन्ट, यू.पी.ओ.–94, यू.पी.ओ.–212, फ्लेमिंग गोल्ड, ओ.एल.– 9, एफ.ओ.– 114, ओ.एस– 6, ओ.एस.–7

बीज एवं बोआई

बोआई का समय	बीज दर (प्रति हेक्टेयर)	बीज शोधन	बोआई की दूरी
15 अक्टूबर-15 नवम्बर	समय से बोआई : 110-115 किलोग्राम लाइन में बोआई : 75-80 किलोग्राम देर से बोआई : 120-125 किलोग्राम	–	लाइन से लाइन : 20 सेंमी

वैसे जई की बोआई अक्टूबर के प्रारम्भ से जनवरी के प्रारम्भ तक की जा सकती है।

उर्वरक प्रबन्धन

ckvkb d le; ¼ifr gO½	130 fdyksxke ;fj;k	250 fdyksxke ,l-,l-ih-	&
iFke Vki Mfl x ¼ifr gO½	ckvkb d 25&30 fnu ckn igyh flpkb d le; 22 fdyksxke ;fj;k		
nljh Vki Mfl x ¼ifr gO½	igyh dVkb d ckn 22 fdyksxke ;fj;k		

जल प्रबन्धन

यदि खेत में नमी न हो तो बोआई से पहले पलेवा करने की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई बोआई के 25 दिन बाद, फिर एक माह के अन्तराल पर कुल 3–4 सिंचाई करने की आवश्यकता पड़ती है। कल्ले निकलने व फूल आने के समय सिंचाई न करने पर उपज प्रभावित होती है।

खरपतवार नियन्त्रण

चारे के लिये बोई गई जई में, जो कि काफी सघन होती है, प्रायः खरपतवार नियंत्रण या गुड़ाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

एकीकृत रोग–कीट प्रबन्धन

जई की फसल में कीट व बीमारियों से प्रायः क्षति नहीं होती है। इसमें दीमक और सफेद चींटी से विशेषकर उन क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई की सुविधा नहीं होती है और जमीन बलुई या बलुई दोमट हो, वहाँ होती है। इसके नियंत्रण के लिए 1.3 प्रतिशत लिन्डेन धूल प्रति हेक्टेयर 20–25 किलोग्राम बोआई के पूर्व खेत में मिला देना चाहिए।

कभी–कभी फसल में आवृत कण्डुआ का आक्रमण होता है, इससे बचने के लिए बीज को 3 ग्राम जिंक कार्बामेंट प्रति किलोग्राम बीज दर से उपचारित करके बोआई करनी चाहिए।

कटाई

चारे के लिए जई की प्रथम कटाई बोआई के 50–55 दिन बाद, जब पौधे लगभग 60 सेंमी लम्बे हो जायें, तब जमीन से 8–10 सेंमी. की ऊचाँई से करनी चाहिए। यदि पहली कटाई देर से की जाती है तो दूसरी कटाई तक पौधों की बढ़वार अच्छी नहीं होती है। दूसरी कटाई खेत में 50 प्रतिशत तक बालियाँ निकलने पर करनी चाहिए। अच्छे व गुणवत्ता युक्त चारे के लिए दो ही कटाई करनी चाहिए। यदि फसल से बीज भी लेना हो तो कटाई बोआई के 50–55 दिन बाद करके बीज के लिए छोड़ देना चाहिए। यदि फसल देर से बोई गई हो तो बिना काटे ही बीज के लिए छोड़ देना चाहिए।

उपज

यदि जई को केवल चारे के लिए प्रयोग किया जाये तो प्रति हेक्टेयर 500–550 कुन्तल उपज प्राप्त होती है। यदि प्रथम कटाई के बाद बीज के लिए छोड़ना हो तो प्रति हेक्टेयर 250 कुन्तल हरा चारा, 20–25 कुन्तल बीज एवं 25–30 कुन्तल भूसा प्राप्त होता है।

xfrfof/k pkVZ

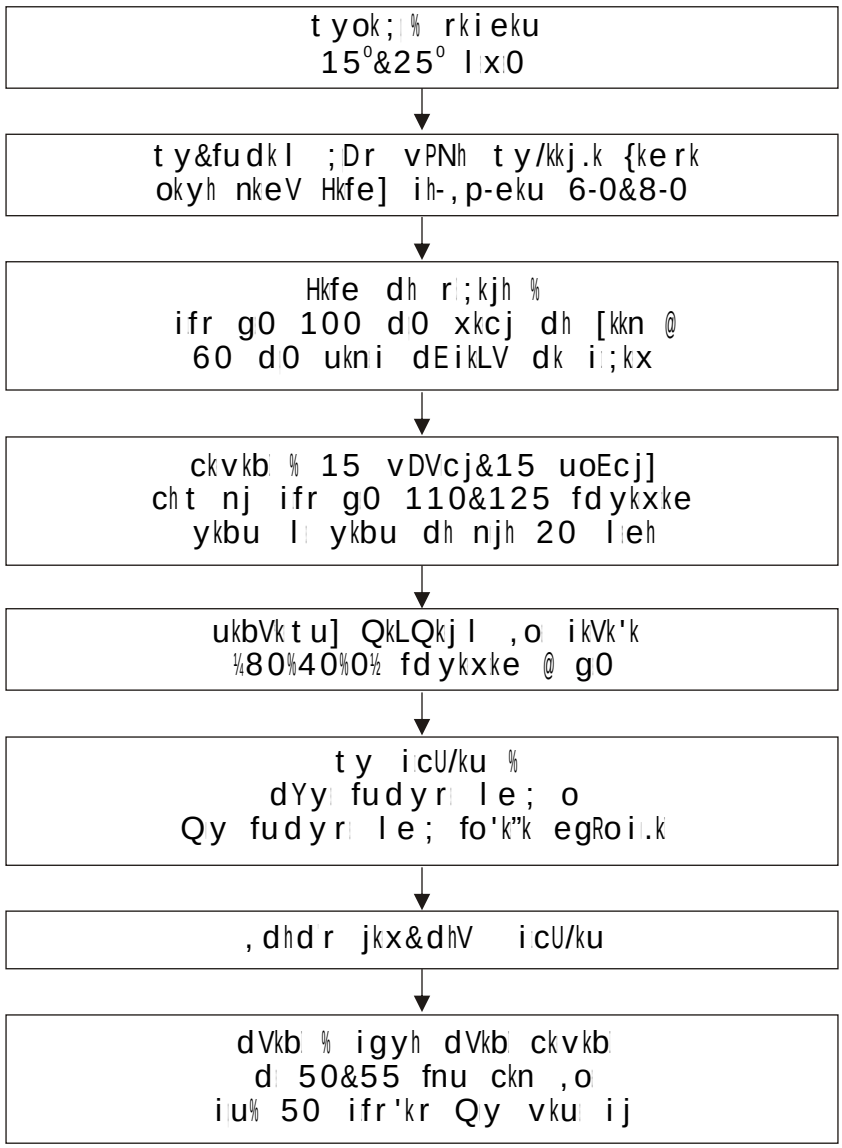

tyok;q % rkieku
15°&25° lsxsa0

↓

ty&fudkl ;qDr vPNh ty/kkj.k {kerk
okyh nkeV Hkwfe] ih-,p-eku 6-0&8-0

↓

Hkwfe dh rS;kjh %
ifr g0 100 d0 xkcj dh [kkn @
60 d0 uknsi dEiksLV dk iz;kx

↓

ckvkbZ % 15 vDVwcj&15 uoEcj]
chat nj ifr g0 110&125 fdyksxzke
ykbu ls ykbu dh njh 20 lseh

↓

ukbVªkstu] QkLQksjl ,oa iksVk'k
¼80%40%0½ fdyksxzke @ g0

↓

tYk iczU/ku %
dYys fudyrs le; o
Qwy fudyrs le; fo'k"k egRoiw.k

↓

,dhd`r jksx&dhV iczU/ku

↓

dVkbZ % igyh dVkbZ ckvkbZ
ds 50&55 fnu ckn ,oa
iqu% 50 ifr'kr Qwy vkus ij